

आज भी एक
कि से कार्य कला, सुतह उल्ला, सामाजिक
तय्य समान की वाद्यता के रूप में कार्य करते हैं।
साब सतिरिवाज, प्रतिमान, रूढ़ियों ये समाज की
वाद्यताएं हैं।

आत्महत्या का सिद्धान्त :-
आत्महत्या को दुर्बिम

ने पूर्णता एक समाजशास्त्री बतना माना है उनका
मानना है कि दुर्बिम में आत्महत्या के सदर्थ में
जितनी भी भ्रान्तियां हैं सब गलत हैं। आत्महत्या
किन्ही प्रकार की व्याधिक्रिय विमारी नहीं है किन्ही
प्रकार का कोई शारिरिक व्याध नहीं है बाकि यह
सामाजिक समस्या है सामाजिक परिस्थितियों के कारण
व्याप्ति आत्महत्या करता है उसकी सामाजिक परिस्थितियां
उसे आत्महत्या के लिए विवश कर देती है दुर्बिम
ने अपनी पुस्तक "ससहड ए स्प्टी इन सोशियोलजी
" जो 1897 में लिखी और उसमें आत्महत्या
का विस्तृत वर्णन है।

दुर्बिम ने आत्महत्या को ऊपरी
तौर पर एक व्याप्त तय्य और मानसिक
परिणामों को माना है उसका निर्धारण अतः
समाजकार होता है।

आत्महत्या में व्यक्ति व्यक्तिगत निर्णय की अपेक्षा सामाजिक अपेक्षा वा सामाजिक संयुक्तता के विभिन्न स्वरूपों के कारण प्रेरित होता है।
आत्महत्या तीन प्रकार की होती है।

① अधर्मवदी
पराधीनवदी

② आस्थाभाविक

③

① अधर्मवदी आत्महत्या

आत्महत्या पुनर्जात सामाजिक कारकों द्वारा होती है किसी भी समाज में जब कोई भी व्यक्ति अपने समाज से अलग समझता है एक निश्चित समय पर समाज का नैतिक संकलन व्यक्तियों के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करता है जो व्यक्ति को छोड़कर सामुदायिक प्रवृत्ति को अपनाता है जब इसकी सामुदायिक प्रवृत्ति समाप्त हो कि जाती है अथवा परिस्थितियों का वह समाज ही तो व्यक्ति अपने जीवन में आसुदासीनता महसूस करता है और इससे उदासीनता के लिए अपने चारों ओर को परिस्थितियों को देखी-देखता है। परिस्थितियों व्यक्तियों को तीव्रता से प्रभावित करता है न्यून मात्रा में जिनसे यह व्यक्ति व्यभिचारी प्रभावित होता है यह

साधने रूढ़ता है। व्यक्ति अपने की महत्त्व का करता है कि उसके आत्मसमान को इस पहुँच रही है और समाज में अस्मा हीरे - 2 अब मेरे नहीं है ऐसी स्थिति में वह आत्महत्या कर लेता है।

2) पारथिवी आत्महत्या :-

जैसा कि उसके नाम से स्पष्ट होता है परार्थ - यानि - पर, उर्थात दूसरों के अर्थों - लिये।

यह आत्महत्या का वह समाजशास्त्री - पक्ष है जिसमें आत्महत्या करने वाला व्यक्ति दूसरों के लिये अपना सर्वस्व त्याग कर देता है उसी निगाह में अपना जीवन कुछ नहीं होता बल्कि वह दूसरों के लिये अपने जीवन की बलि दे देता है।

चन्द्रशेखर आज़ाद ने भारतमाता की स्वतंत्रता के लिए लिये अपने जीवन की महत्व नहीं दिया बल्कि भारतमाता को महत्व प्रिये और अपने माता की गोली मार दी।

उपलक्ष्य में विद्वान् सोचे तो यह पते हैं कि यह आत्महत्या तब बहिर होती है जब समाज में अत्यधिक अक्रान्ति व संगठन होता है इसमें आत्महत्या को एक कर्तव्य के रूप में लोग स्वीकार करते हैं।

सुगानों के आक्रमण के समय राजपूत
राजाओं की पत्नियों अत्यधिक संगठित भाव
से आग में जलकर आत्महत्या कर लेती थीं।

महतीन प्रकार की होती हैं।

① अनिवार्य परमार्थी आत्महत्या

— ऐच्छिक

(ii) उग्र परमार्थी आत्महत्या

(iii) अनिवार्य परमार्थी आत्महत्या :-

इसमें व्यक्ति

सामाजिक व धार्मिक कर्तव्य के रूप में आत्महत्या
को स्वीकार करता है इस आत्महत्या में व्यक्ति
परस्परिक रक्ष से इतना घनिष्ठ होता जाता है
कि व्यक्ति का विवर्तित्व उस समाज में
समूह में पूर्ण तरह किमिन्न हो जाता है

पति के मरण पर पत्नी की आत्महत्या

(ii) ऐच्छिक

इसमें व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर
है इसमें व्यक्ति अनन्त इच्छाओं से
नैतिक दृष्टि से अपने को जोड़ लेता है
और फिर सामाजिक प्रतिष्ठा का विषय बना लेता
है और उसी पुत्र के लिये आत्महत्या कर
लेता है

कि

अस्वाभाविक आत्महत्या :-

उदा परमार्थवादी आत्महत्या :-

को किसी दूसरे या तीसरे समूह से या व्यक्ति से जोड़ लेता है तो वह उग्र पार्थववादी आत्महत्या हो जाता है।

कि. निगे नदी में कुद जाना

अस्वाभाविक आत्महत्या :-

जीवन में अस्वाभाविक रूप से परिवर्तन का जाता है तो वह अपने को अनुकूलित नहीं कर पाता, वर - २ अनुकूलन असफल होने पर उसमें अस्वाभाविकता बढ़ जाती है। जिसके कारण उसकी स्थिति काफी नीचे गिर जाती है ऐसी स्थिति में वह अपनी आवश्यकताओं को अन्याय कर नहीं कर पाता और नयी परिस्थिति में वह जीवित से आत्महत्या नहीं करता करता। एवं दोनों चिकित्सात्मक विचारों अनुकूलन की दृष्टि से नहीं मिलती तो तब ही आत्महत्या कर लेता है।

दुर्बिम ने कहा है व्यक्ति के जीवन में उच्च
अनुशासन का बंध है जता है तो जीवन की
कन्या रखने के लिये व्यक्ति सामना करता है
अगर उससे भी व्यक्ति अनुकुलन नहीं कर पाता
तो व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है।
दुर्बिम का मानना है कि विवाह और जो
संस्कार है वह व्यक्ति के मौन संबंधों के
अनुकुलन के लिये है विवाह से मौन संबंधों
के अनुकुलन के लिये है। विवाह से मौन
को कम करने में मदद मिलती है